बांग्ला मुहावरों में बंगाली समाज का चित्रण : एक अध्ययन

ज़ीनत उल ख़ुशबू एम.फिल शोधार्थी (अनुवाद अध्ययन विभाग) म.गा.अं.हिं.वि, वर्धा

प्रस्तुत शोध पत्र में हम बांग्ला मुहावरों में चिन्हित और दृष्टव्य बांग्ला समाज को रेखांकित करने का प्रयास करेंगे। किसी भी समाज की बुनावट का अध्ययन उस समाज में प्रचलित लोक साहित्य के अध्ययन से किया जा सकता है। जब हम किसी समाज का अध्ययन करते हैं तो उन तमाम पहलुओं को देखते समझते हैं जो किसी समाज की निर्मिती में सहायक होते हैं जैसे उस समाज में सामाजिक,आर्थिक,राजनैतिक,संस्कृतिक परिस्थितियाँ कैसी हैं। उस समाज में स्त्रियाँ, दलितों अथवा वर्गों की क्या स्थिति है। खान-पान से लेकर तीज तयौहार तक सभी इस अध्ययन का हिस्सा होते हैं।

प्रस्तुत शोध पत्र में हम बांग्ला मुहावरों में अभिव्यक्त बांग्ला समाज को रेखांकित करेंगे। बांग्ला भाषा में मुहावरे को प्रोबाद कहते हैं। हिंदी में मुहावरा संक्षिप्त रूप में ही होता है किंतु बांग्ला में इतना संक्षिप्त नहीं होता। बांग्ला समाज हिंदी समाज से भिन्न है। बांग्ला समाज में एक अलग ही अनुशासन है। खान पान में भी बंगाल में कड़वे व्यंजन से खाने की शुरुआत होती है। और इस संदर्भ में बांग्ला में मुहावरे भी बोले जाते हैं। कुछ मुहावरों की उत्पत्ति अकाल के समय अपने आप हो गई। बंगाल का मुख्य खाद्य मछली है जिसे बंगाली लोग माछ कहते हैं। यहाँ मछली की कई प्रजाति पायी जाती हैं जैसे, कोई, ईलीश,चिंगड़ी,शोल,पुटी इत्यादि। इन मछलियों पर कई प्रोबाद बोले जाते हैं। जिस मछली की जो प्रवृति है उसको उसी प्रवृति से जोड़कर प्रोबाद बोला जाता है। बंगाल में लोगों के व्यवसाय को लेकर भी कई प्रोबाद देखने को मिलते हैं। बंगाल में पहले बहु विवाह प्रथा बहुत अधिक थी इसलिए कई बांग्ला प्रोबादों में सौतनों की भी चर्चा है। सौतन पर बहुत से मुहावरे बांग्ला भाषा में देखने को मिल जाते हैं। बांग्ला मुहावरों में लैंगिक असमानता भी बहुत देखने को मिलती है। स्त्री- पुरुष पर आधारित मुहावरे बांग्ला समाज में बहुत अधिक प्रचलित हैं। जाति एवं वर्गों के आधार पर भी कई मुहावरे मिलते हैं।

I. file:///F:/net%20matters%20collection/मुहावरा%20-%20विकिपीडिया.html

II. वही

प्रो. इन्द्रपाल सिंह का कथन है – "किसी भी भाषा की यथार्थ शक्ति का आभास उसमें प्रयुक्त लोकोक्तियों एवं मुहावरों के प्रयोग से मिलता है। अर्थ सौंदर्य, भावाभिव्यंजना अभीष्ट प्रभाव एवं वांछित अनुभूति की दृष्टि से पद्य में जो स्थान अलंकारों का है, गद्य में वही स्थान लोकोक्तियों एवं मुहावरों का है।" 1

डॉ. शशि शेखर तिवारी के अनुसार – मुहावरे परंपरा की संवाहिका और ऐतिहासिक चेतना की प्रतिध्वनि होती है। इसलिए उनमें किसी देश या जनपद के राजनीतिक और सांस्कृतिक इतिहास की प्रचुर सामग्री संचित रहती है। मुहावरे साहित्य के इतिहास के मुख्य अंगों – मुद्रा, अभिलेख और भग्नावशेष की भाँति परंपरा के उदघाटन में विशेष रूप से सहायक होती है।"2

मुहावरे क्योंकि किसी समाज विशेष की मान्यताएँ होते हैं ऐसे में वे अपने समाज का एक प्रतिबिंब भी निर्मित करते हैं जिससे कि हम उस समाज विशेष की भाषा के अध्ययन के माध्यम से समाज की मान्यताओं,संस्कृति,परंपराओं,रिती रिवाजों,असमानताओं,समानताओं,वर्ग भेद,जाति भेद,लैंगिक सरंचना, आयु वर्ग की प्रयुक्तियाँ आदि को समझने का प्रयास कर सकते हैं। भाषा के अध्ययन से हम समाज का अध्ययन कर सकते हैं। इस अध्ययन में भी हमने मुहावरों के माध्यम से समाज में प्रचलित भाषा रूपों , विशिष्ट प्रयुक्तियों को तलाशने का प्रयास किया है और यह देखने का प्रयास किया है कि भारतीय समाज में प्रचलित इन मुहावरों में भाषा के वे कौन से रूप हैं अथवा लक्षणा व्यंजना के वे कौन से आधार हैं जिनके माध्यम से हम इस समाज विशेष के विशेष भाषाई स्वरूप का अध्ययन करने का प्रयास कर सकते हैं।

1.बांग्ला समाज के विभिन्न वर्गों का मुहावरों में चित्रण

बंगाल में जब अकाल पड़ा तब कई लोगों को खाने पीने तक को नहीं मिलता था। ये लोग अधिकतर निम्न वर्ग से थे जो जमींदारों और उच्च वर्ग के लोगों के पास जाकर खाना जुटाते थे। इन परिस्थिति में लोगों ने कई प्रोबाद रचे ।

- आकालेर भात जूगेर खोंटा - अकाल का भात युगों तक जताया जाता है।

अकाल का भात : अकाल में बांटा गया अनाज,किसी को खराब आर्थिक स्थिति में आर्थिक स्थिति में पैसे

अथवा अनाज से सहायता करना। समाज चाहे कोई भी हो अकाल आदि पड़ने के बाद सहायता करने वाले लोग जीवन भर उस सहायता के किस्से कहते रहते हैं खासकर भारतीय समाज में यह परंपरा आम है यहाँ सामूहिक बातचीत की संस्कृति होती है वहाँ अपनी अच्छाई का गाँ कराते लोग सामान्यत दिखाई देते हैं। बंगाल में पड़े अकाल को लेकर कई सारी उक्तियाँ प्रचलित हैं यह मुहावरा भी उसी का हिस्सा है। एक समय के बाद हम जब इन मुहावरों को पढ़ते हैं तो बंगाल में पड़े अकाल के बारे में जानकारी मिलती है।

आकाले किना खाय, पागोले किना कोय ? – अकाल में क्या नहीं खाते, पागल व्यक्ति क्या नहीं कहते।

आगे भालो छिलो जेले जालदोड़ा बुने, की काज कोरिलो जेले एँड़े गोरु किने-

अनुवाद : मछुआरा कभी खेतों में अन्न नहीं उगा सकता

अर्थ : मछुआरा जब जाल बुनकर मछली पकड़कर जीवन यापन करता था तब बहुत सुखी था। किंतु अचानक उसको खेती करने की इच्छा हुई। उसने जाल बेचकर, अड़ियल बैल ख़रीदकर खेती आरंभ की। किंतु खेती असफल रही। अड़ियल बैल भी मर गया। इधर जाल और रस्सी भी नहीं है,अब उसके जीवन यापन का कोई उपाय नहीं रहा। चिरअभ्यस्त कार्य त्याग कर जो अनअभ्यस्त दूसरे कार्य करता है, उसका मंगल नहीं होता है। लोभवश पैतृक व्यवसाय त्याग करने से क्षति होती है।

बांग्ला समाज में मछली पालन प्रचलित है क्योंकि वहाँ की खान पान संस्कृति और आर्थिक सरंचना में मछली पालन की विशेष उपयोगिता है। मछुआरा जन्म से ही अपने माँ-पिता के साथ जीविकोपार्जन की दृष्टि से मछली पकड़ने के पेशे से जुड़ा रहता है इसलिए वह उसमें पारंगत हो जाता है। इसी तरह हर वर्ग का व्यक्ति अपने अपने पेशे में पारंगत होता है। हिंदी पट्टी की जब बात की जाए तो वहाँ कृषि आधारित व्यवस्था है इसलिए वहाँ के मुहावरों में कृषि से जुड़े शब्द अधिक प्रयुक्त होते हैं जैसे : अकेला चना भाड़ नहीं फोड़ सकता, ओखली में सर दिया तो मूसल से क्या डरना,थोथा चना बाजे घना।

- **आशाय मोरे चाशा -**

अनुवाद : अधिक आशा भी किसान को मार डालती है

अर्थ : किसान प्रचुर मात्रा में फ़सल पाने के लिए खेती करता है, किंतु यदि अच्छी वृष्टि नहीं होती है तो फ़सल नहीं हो पाती,किसान का जीवन क्षतिग्रस्त होता है। निम्न वर्गीय किसान जो खेती करता है उसकी आजीविका उसी पर निर्भर है।

- **एकके आर, देखबे बेगार-** बैठे-ठाले आदमी से काम कराना मतलब काम बिगाड़ना।

अर्थ : बेगार से काम कराने से काम प्रायः ठीक नहीं होता। यह मुहावरा उच्च वर्ग या पूंजीपति वर्ग की सोच को बताता है कि जो बेरोज़गार है उससे काम नहीं हो पाएगा और वह काम खराब कर देगा। जिनके पास कोई काम नहीं होता उनसे कोई काम नहीं करवाना चाहिए क्योंकि ऐसी धारणा है कि बेकार आदमी अच्छे से काम नहीं कर सकता।

- **एक काटे भारे, एक काटे धारे-**

अनुवाद : एक भार से कटता है, एक धार से कटता है।

अर्थ : शस्त्र में भारीपन और धार न हो यदि हो तो कोई वस्तु काटी नहीं जा सकती। इसी प्रकार मनुष्य भी पैसे के बल से किसी को बाध्य कर सकता है और अपने बुनियादी गुण से बाध्य कर सकता है। पैसा या गुण यदि न हों तो कोई बाध्य नहीं होता।

- **उदोर बोझा बुदोर घाड़े-** उदो का बोझा बुड़ो के कंधे पर।

अनुवाद : अपना दोष दूसरे पर मढ़ना

उदोर और बुधो नाम हैं

अर्थ : व्यक्ति की नीति है कि वह अपने दोष स्वीकार नहीं करता क्योंकि दोष स्वीकार करने से लोग उसके प्रति अच्छा व्यवहार नहीं करेंगे इसलिए वह अपने दोष दूसरों पर मढ़ने का प्रयास करता है।

- **उदबिड़ाले माछ धोरे, खोटाशे तीन भाग कोरे-**

अनुवाद : बिल्ली पकड़े मछली कटाश खाए तीन हिस्सा

अर्थ : बिल्ली कष्ट करके मछली पकड़ती है, और कटाश आकर उसमें हिस्सा लेता है। किसी के परिश्रम का फल कोई और उपभोग करता है।

इस प्रकार हमने यहाँ यह देखने का प्रयास किया कि किस तरह बांग्ला समाज में मछली से संबन्धित मुहावरे प्रचलित हैं|

- **आमे दुधे एक होय, आदाड़ेर आँटी आदाड़े जाय-**

अनुवाद : आम और दूध दोनों उत्कृष्ट बंधु हैं

अर्थ : आम और दूध दोनों मिलाये जा सकते हैं, क्योंकि दोनों में मिलने के गुण हैं यहाँ दोनों एक-एक जैसे गुणों की तरफ संकेत है जिसे इस तरह से भी कहा जा सकता है कि एक जैसे दो मनुष्य एक साथ रह सकते हैं लेकिन विपरीत स्वभाव के लोग एक साथ इतने घुल-मिल नहीं सकते।

- **कर गोबिंदो बापेर श्राद्ध, आरो बामून आछे-**

अनुवाद : पिता के श्राद्ध में पंडितों की कमी नहीं होती

- **कर्ज कोरे जेइ, कोष्टो पाय सेई-**

अनुवाद : जो कर्ज़ लेता है, वही कष्ट पाता है।

यह मुहावरा गरीब वर्ग के लोगो के लिए अधिक प्रयोग होता है। जो कर्ज़ लेकर चुका नहीं पाते हैं।

- **कर्ता मूगेर डाल खान ना, केनो खान ना ? पान ना ताई खान ना-**

अनुवाद : कर्ता मूंग की दाल नहीं खाते, क्यों नहीं खाते ? नहीं पाते इसलिए नहीं खाते।

अर्थ : जो वस्तु ना प्राप्त हो सके उसके लिए यह कहा गया है। यह मुहावरा भी गरीब वर्ग को दर्शाता है।

1. मूँग की दाल खाना :मूँग दाल महँगी होती है इसलिए गरीब आदमी नहीं खा सकता।

2 . कर्ता : पुरुष के लिए प्रयुक्त किया गया है ,क्योंकि घर का कर्ता पुरुष ही हो सकता है स्त्री नहीं।

- **एक पोइसा नाई थोलीते, लाफिये बेड़ाय गोलीते-**

अनुवाद : पास नहीं दाने अम्मा चली भुनाने

अथवा : एक पैसा नहीं थैली में, कूदते फिरे गली में।

2. बांग्ला समाज में प्रचलित बहू-विवाह प्रथा का मुहावरों में चित्रण

- **आन सोतीन नाड़े चाड़े,बून सोतीन पुड़िए मारे-** अन्य सौतन हिलाती डुलाती है, बहन सौतन जलाकर मारती है- अर्थात अन्य सौतन केवल झगड़ा करती है, किंतु अपनी भगिनी यदि सौतन है तो वह अन्य सौतन की अपेक्षा अधिक यातना देती है। अपने लोग ही अधिक अनिष्ट करते हैं।
- **आन मागीर आन चिंते, दुओ मागीर पति चिंते -**

अनुवाद : अकेली स्त्री की सांसारिक अनेक प्रकार की चिंता रहती है,किंतु जिस स्त्री की सौतन होती है या जो स्त्री पति की

अप्रिय होती है वह हर काम में ही पति के बारे में सोचती है।

अकेली रमणी की सांसारिक अनेक प्रकार की चिंता रहती है,किंतु जिस रमणी की सौतन होती है या जो रमणी पति की अप्रिय होती है वह हर काम में ही पति के बारे में सोचती है।

सामाजिक मान्यता : स्त्री यदि पति के बारे में सोचती रहे सौतन के बारे में सोचती रहे तो वह उन सभी सांसारिक चिंताओं से बच सकती है जो उसे अकेले रहते हुए भोगनी पड़ती हैं। सौतन के साथ रहने से जो मानसिक प्रताड़णा उसे सहनी पड़ती है उसे सकारात्मक माना गया है। क्योंकि स्त्री यदि लगातार पति के बारे में सोचे तो ही ठीक है ऐसी सामाजिक मान्यता है।

- **'एकबोरे' भातारेर माग चिंगड़ी माछेर खोसा**

'दोजबोरे' भातारेर माग नीति कोरेन गोंसा

'तेजबोरे' भातारेर माग सोंगे बोसे खाय

'चरबोरे' भातारेर माग कांधे चोड़े जाय

अनुवाद : प्रथम पत्नी झींगा मछली के छिलके के समान,
दूसरी पत्नी नीति करती है,
तीसरी पत्नी साथ बैठकर खाती है,
चौथी पत्नी कंधे पर चढ़ जाती है।)

शब्दार्थ :

1. झींगा मछली के छिलके के समान स्त्री : मूल्यहीन स्त्री
2. नीति करने वाली स्त्री : चालाक और चालबाज स्त्री
3. साथ बैठकर खाने वाली स्त्री :पहली दो स्त्रियॉ से थोड़ी सी प्रिय
4. कंधे पर चढ़ने वाली स्त्री : प्रिय,जिसकी हर बात मानी जा सकती है

अर्थात : बहुपत्नी विवाह में चौथी स्त्री इसलिए प्रिय दिखाई गई है क्योंकि वह पति से छोटी भी है।

- **एक बोरेर स्त्री हेलादोला, दोजबोरेर स्त्री गोलार माला-**

हेलोदोला : पहली पत्नी सीधी सादी

गोलार माला : दूसरी पत्नी गले की माला

पहली पत्नी की अपेक्षा दूसरी पत्नी अधिक आदरणीय होती है , गले की माला होना : अधिक प्रिय होना)

3. **मछली अथवा मछुआरा जीवन से संबंधित मुहावरों में बांग्ला समाज के खान पान के चित्रण**

जेलेर परने टेना पजारीर काणे सोना-

अनुवाद : मछुआरा पहने चिथड़ा और बिचोलियों के कान में सोना।

अर्थात: उल्टा न्याय । हिंदी में इस आशय को व्यक्त करने के लिए 'मुहावरे हैं जुलाहे की बीबी नंगी','कुम्हार के घर फूटी हांड़ी','घर में कोल्हू तेली खाए सूखा'

1. छछूंदर : दलितों के लिए प्रयुक्त शब्द

2. ताँती समाज के लोग स्त्री के कहने पर मरने चले जाते हैं :

स्त्री के कहने पर (व्यर्थ की बात पर मरने चला जाता है) उस समाज के सीधेपन को इस सामाजिक मान्यता से जोड़कर दिखाया गया है। ताँती समाज के भोलेपन को दर्शाने के लिए स्त्री की बात पर मरने चले जाने की प्रयुक्ति प्रयुक्ति है जिससे स्त्री को एकदम बेकार बात करने वाली अर्थहीन तो बताया ही है साथ ही ताँती समाज की विशेषता भी बताई गई है ।

- **अल्पो जोलेर पुठी माछ फोर फोर कोरे** – अल्प जल की मछली अधिक उछलती है।

आगे तेतो शेसे मीठे - पहले कड़वा अंत में मीठा- वैदिक शास्त्र के अनुसार कड़वा आहार पहले खाना चाहिए और मीठा आहार बाद में। जो पहले अप्रीतिकर बोलते हैं, अंत में वो ही आनंद प्रदान करते हैं।

आगे भालो छिलो जेले जालदोड़ा बुने, की काज कोरिले जेले एँड़े गोरू किने - पहले जाल बुनकर अच्छा था मछुआरा , अड़ियल बैल ख़रीदकर गलती किया।

आनारोस बोले काँठाल भाई, तुमी बोड़ो खोसखोसे – अनानस बोला कठल भाई, तुम बहुत खुरदुरे हो। • **कोई माछेर प्राण** – कोई मछली के प्राण।

कोचू पोड़ा खाऊ – भुनी हुई अरबी खाओ।

4. बांग्ला समाज में जाति प्रथा का मुहावरों में चित्रण

कपास और रुई से संबन्धित प्रोबाद संभवतः जुलाहा जाति के लोगो द्वारा ही प्रयोग किया गया होगा। जुलाहा वह जाति है जो गद्दा, तकिया, रज़ाई और रुई से बनी चीजों को बनाता है।

आन कापास, ने तूलो- कपास लाओ, रुई ले जाओ।

5. मुहावरों का जेंडर संबंधी परिदृश्य

प्रस्तुत मुहावरों में हमने उन मुहावरों का चयन किया है जिनमें स्त्री पुरुष संबंधों के बारे में सामाजिक मान्यताओं,धारणाओं और विचारों की झलक मिलती है। जैसे अभागिन स्त्री,अभागिन स्त्री का बेटा,सौतन स्त्री, स्त्रियॉं के काम,पुरुषों के प्रति मान्यताएँ,कपूत,सपूत, सूट कातना, मछली से स्त्री की तुलना करना उसे गहरे अथवा कम जल की मछली कहना आदि मुहावरों को हमने इसके अंतर्गत संकलित करते हुए उनका अनुवाद किया है। इसमें हमें बंगाल की संस्कृति की झलक दिखाई देती है। इसी के आधार पर हमने इसका समाजभाषा परक अध्ययन भी किया है।

- अभागिनी के दो पूत, एक दानव दूसरा भूत
- आन मागीर आन चिंते, दुओ मागीर पति चिंते – अकेली रमणी को अनेक प्रकार की सांसारिक चिंताएं रहती हैं ,किंतु जिस रमणी की सौतन होती है या जो रमणी पति की अप्रिय होती है वह हर काम में ही पति के बारे में सोचती है।
- आन सोतीन नाड़े चाड़े,बून सोतीन पुड़िए मारे- दूसरी सौतन हिलाती डुलाती है, बहन सौतन जलाकर मारती है- अर्थात अन्य सौतन केवल झगड़ा करती है, किंतु अपनी भगिनी यदि सौतन है तो वह अन्य सौतन की अपेक्षा अधिक यातना देती है। अपने लोग ही अधिक अनिष्ट करते हैं।
- एक माणिक सात राजार धोन- एक माणिक सात राजा का धन। (एक मणि सात राजा के धन के समान है। बहुत मुयवान रत्न है। और पुत्र को भी मणि रत्न कहा जा रहा है। यहाँ लैंगिक असमानता को दर्शाया गया है।)
- एक पुत्रेर आशा,आर नोदिर तीरे बासा-एक पुत्र की आशा, नदी किनारे घोंसला। (एक मात्र पुत्र के माता पिता सदा अपने पुत्र को खोने का डर अपने मन में लिए रहते हैं।)
- उठ छुड़ी तोर बीए, बाड़ा भात खेये – परोसा हुआ खाना खाने के बाद , उठो लड़की तुम्हारा विवाह है। (अर्थ : किसी बातचीत या संभावना के बिना ही अचानक कोई काम अतिशीघ्र करना पड़े , इस स्थिति में यह मुहावरा प्रयोग होता है।)
- आशाड़े न होले सूत, हा सूत सो सूत। शोलोते न होले पूत, हा पूत सो पूत – आशाड़ में यदि सूत न बना तो नहीं बनेगा, सोलह में यदि पुत्र न हुआ तो नहीं होगा। (अर्थ : आषाढ़ के माह में दिन लंबे होते हैं, इस माह में यदि सूत नहीं काता जाए तो सूत पाने में कष्ट होता है और यदि सोलह वर्ष में स्त्री को पुत्र न हुआ तो उसको पुत्र होने की संभावना कम हो जाती है। इस मुहावरे में लैंगिक असमानता को दिखाया जा रहा है। इसमें स्त्री वर्ग को कम उम्र में ही विवाह करने के लिए प्रेरित किया जा रहा है, यदि जल्दी विवाह न किया गया तो पुत्र नहीं मिलेगा। पुत्र को महत्व दिया गया है)
- आम शूकाले आमसी, जौबोन फुराले काँदते बोसी- आम को सुखाने से अमावट बन जाता है, और यौवन समाप्त होने पर रोने बैठते हैं – अर्थ : जैसे आम को सुखाकर अमावट बन जाने के बाद आम की वह विशेषता नहीं रह जाती और उसको वह आदर नहीं मिलता उसी प्रकार स्त्री का यौवन काल समाप्त हो जाने पर स्त्री को पहले जैसा आदर नहीं मिलता।

- एक मायेर एक पूत, खाय दाय जोमेर दूत – एक माँ का एक पूत, खाता पिता यम का दूत। (एक ही मात्र पुत्र होने के कारण दुलार से बिगड़ जाता है।
- एक पान के दो हिस्से हुए,सोने के सिंहासन का हिस्सा हुआ। (पहली पत्नी के लिए कहा जा रहा है।)

कोथार दोशे कार्य नोष्टो,भिक्खाय नोष्टो मान

गिन्निर दोशे गृह नोष्टो, लोकखी छेड़े जान-

कथ्य दोष से कार्य नष्ट, भिक्षा से नष्ट मान

गृहणी दोष से गृह नष्ट, लक्ष्मी छोड़ जाय ।

(अपनी कथनी की गलती के कारण बहुत से कार्य बनते-बनते बिगड़ जाते हैं , भिक्षा मांगने से आत्मसम्मान नष्ट हो जाता है। गृहणी यदि ठीक न हो तो घर नहीं बस पाता है, और घर से लक्ष्मी(धन) चली जाती है। यहाँ घर में धन संपत्ति का संबंध स्त्री के स्वभाव से जोड़ा है। यदि स्त्री सही रहती है (समाज द्वारा सही होने की परिभाषा ही यहाँ दी गई है) तो लक्ष्मी (धन) भी रहेगा।

- अभागार घोड़ा मोरे, भाग्गोबानेर माग मोरे- अभागा का घोड़ा मारता है भाग्यवान की स्त्री मरती है।(समाज में यह सोच है कि स्त्री यदि मरती है तो उसका पुरुष भाग्यवान है। यह स्त्री के प्रति असमानता की भावना है।)
- कुनेर घोरेर मासी, बोरेर घोरेर पीसी – दुल्हन के घर की मासी, दूल्हे के घर की बुआ – नारद मुनि होना। दोनों पक्ष के साथ रहना।
- कोपाले आछे बाँदी, सुखेर लागी काँदी – भाग्य खोटा होना ।

इस मुहावरे में बाँदी का अर्थ है दासी अथवा गुलाम या सेविका। यहाँ सेविका के समान यदि किसी के भाग्य में पत्नी मिल जाए तो उसका भाग्य खराब माना जा रहा है। यह समाज की उस सोच को दर्शा रहा है जिसमें स्त्री को तुच्छ और निम्न समझा जाता है।

निष्कर्ष : बांग्ला मुहावरों में बांग्ला समाज के चित्रण मिलते हैं। इन मुहावरों के माध्यम से हमने यह देखने का प्रयास किया कि बांग्ला समाज में बहू-विवाह,मछली पालन,जाति व्यवस्था, सौतन की स्थिती आदि के बारे में क्या क्या धारणएं प्रचलित रही हैं।अत: निष्कर्ष के रूप में हम कह सकते हैं कि बांग्ला मुहावरों में बंगाली समाज के चित्रण देखने को मिलते हैं।जिनका अध्ययां हमने मुहावरों के माध्यम से करे का प्रयास किया है। इन मुहावरों में बिंब ,प्रतीक आदि के रूप में मछली का प्रयोग अधिक दिखाई देता है आरण हैं बंगाल में मछली अधिक खाई जाती है। मछली को प्रतीक के रूप में प्रस्तुत करते हुए उसकी तुलना स्त्री से की है। अलग –अलग नस्ल की अलग-अलग मछलियाँ और उनकी अलग अलग विशेषताएं मुहावरों में दिखाई देती हैं। इसके अलावा बहु-विवाह प्रथा का भी जिक्र इन मुहावरों में मिलता है वैसे तो पूरे भारत में बहु-विवाह प्रथा का प्रचलन दिखाई देता है परन्तु बांगला मुहावरों में बहु-विवाह प्रथा के कारण सौतन के प्रति उपजी खीझ और इर्ष्या के चित्रण भी दिखाई देते हैं। लोकगीतों में स्त्री पक्ष अधिक होता है क्योंकि लोकगीतों की रचना अधिकतर स्त्रियों द्वारा की जाती है। जबकि मुहावरों में पुरुषों का पक्ष अमूमन अधिक देखने को मिलता है। बांग्ला मुहावरों में स्त्री के पक्ष में खुलकर तर्क दिखाई देता है इसके बाबजूद साज द्वारा स्त्रियों से की जा रही अपेक्षाएं भी इन मुहावरों में दिखाई देती हैं जिस से हम पितृसत्तात्मक समाज के इतिहास को समझते हैं। इसके अलावा जाति व्यवस्था भारतीय समाज में हमेशा से रही है। वर्ग भेद भी इस देश की सामाजिक बुनावट का आधार रहा है। जाति के आधार पर कर्म विभाजन के चलते जिसका काम उसी को साजे जैसे अनेक मुहावरे बांग्ला भाषा में देखने को मिलते हैं।

Contributors Details :

ज़ीनत उल ख़ुशबू

एम.फिल शोधार्थी (अनुवाद अध्ययन विभाग)

म.गा.अं.हिं.वि, वर्धा